कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

जगदेवराम उरांव

01 अक्टूबर 1949 - 15 जुलाई 2020

तुम युग चिंतक, युग प्रहरी,
तुम थे युग के उजियारे ।
तुझको प्रणाम हम करते,
हे ! संस्कृति के रखवारे ।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 31, अंक 3
जुलाई-सितम्बर 2020 (विक्रम संवत् 2077)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता, डॉ. रंजना त्रिपाठी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- अद्वितीय सूरज थे हमारे ... 2
- हम करें राष्ट्र आराधन 3
- प्रकृति वंदन – एक पहल प्रकृति ... 5
- एकनिष्ठ कर्मयोगी ... 8
- हलमा परमार्थ की परंपरा ... 10
- तमसो मा ज्योतिर्गमय 12
- हमारे प्रिय महितोष दा 14
- स्मृतियाँ ही जिनकी शेष हैं... 15
- अमृत वचन 15
- बोधकथा...किसी बात की... 16
- कविता ...कदम मिलाकर बढ़े चलें 16

अद्वितीय सूरज थे हमारे जगदेवराम जी

सादा जीवन उच्च विचार के जीवंत प्रतिमान हमारे श्रद्धेय राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदेवराम उरावं ने 16 जुलाई 2020 को कल्याण आश्रम के जशपुर मुख्यालय में अंतिम सांस ली। आज से 67 वर्ष पूर्व एक अंकुर जशपुर तहसील के कोमड़ो गाँव की धरती में प्रस्फुटित हुआ और वटवृक्ष बनकर धरती की गोद में समा गया। एक सुमन महका और अपना पराग लुटाकर विलीन हो गया। एक सूरज उदित हुआ और तेजोमय, कर्ममय जीवन का संदेश देकर छिप गया समय के सागर में। सूरज डूबा पर अपने व्यक्तित्व की रश्मियाँ बिखेर गया। **अद्वितीय सूरज थे हमारे जगदेवराम जी**।

उनको याद करते हैं तो एक सादा जीवन जीने वाले साधारण से व्यक्ति की छवि हमारे सामने आती है। लेकिन जब हम उनके कामों को याद करते हैं, उनके विचारों को याद करते हैं तो व्यक्तित्व का ऐसा स्तर दिखाई देता है जो आसमान छूता है। सादा सरल जीवन जीकर भी किस तरह एक रचनात्मक और जनोपयोगी जीवन जिया जा सकता है, जगदेवराम जी इसका ज्वलंत उदाहरण थे। वे एक निर्मल अंत:करण के कार्यकर्ता रहे। सेवा, प्रेम और करुणा की त्रिवेणी उनमें प्रवाहित होती रहती थी। वे एक मौन साधक थे। बोलते बहुत ज्यादा नहीं थे। उनका पूरा व्यक्तित्व एक संत जैसा रहा है। उनके कार्य, व्यवहार एवं आचरण में संत जैसी प्रतीति होती थी। उनके सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति उनके विचारों के प्रभामण्डल में असीम शांति अनुभव किए बिना नहीं रह सकता था। उनका सादगीमय, श्रमपारायण जीवन कार्यकर्ताओं को मूक प्रेरणा देने वाला था। वे धुन के धनी और विचारशक्ति के पुंज थे।

उनके जीवन पर कल्याण आश्रम के संस्थापक अध्यक्ष वनयोगी बालासाहब के व्यक्तित्व, महानता, सेवाभाव और रचनात्मकता की गहरी छाप पड़ी। बालासाहब उनके लिए आदर्श भी थे और प्रेरणा के स्रोत भी। बालासाहब ने अपनी पैनी छेनी से तराश कर जगदेवराम जी जैसे हीरे को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान कर दिया। उनके वचन और कर्म में पार्थक्य नहीं था। सच्चे अर्थों में वे एक महामानव थे। क्योंकि परहित एवं पर चिंतन में स्वयं की आहुति देने वाले गिने चुने ही व्यक्ति होते हैं। वनवासी समाज, संस्कृति, परम्परा, रीति-रिवाज, वनवासियों के गौरवशाली इतिहास एवं वनवासी महापुरुषों के बारे में उनका गहन एवं व्यापक अध्ययन था। कहा जा सकता है कि वे वनवासी विषय के चलते फिरते कोश थे। हममें से अधिकांश को उनके मार्मिक उद्‌बोधन सुनने का भी सौभाग्य मिला है। उनका हृदय ही भाषा बनकर बोलता था। ऐसे महामना व्यक्तित्व का असमय चले जाना पूरे वनवासी समाज और कल्याण आश्रम संगठन के लिए अपूरणीय क्षति है। किंतु वे कार्यकर्ताओं के हृदय पटल पर ऐसी छाप छोड़कर गये हैं जिसे कभी मिटाया नहीं जा सकता। उनके जीवन से हम सबको शुद्ध, सात्विक और पवित्र जीवन जीने तथा समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पित भाव से सतत् क्रियाशील रहने की प्रेरणा मिलती रहेगी। इति शुभम्!

- स्नेहलता बैद

हम करें राष्ट्र आराधन

- शशि मोदी, सहमंत्री कोलकाता महानगर महिला समिति

हम करें राष्ट्र आराधन
अपने हँसते शैशव से
अपने खिलते यौवन से
प्रौढ़ता पूर्ण जीवन से
हम करें राष्ट्र का अर्चन
हम करें राष्ट्र आराधन...

स्वतंत्र भारत का 74वाँ स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2020 को एक बार फिर हमें याद दिलाने आया कि नहीं भूलना शहीदों के बलिदान को, जिन्होंने अपना आज हमारे कल के लिए लुटा दिया था। भारत माता की संतानें अपना यह राष्ट्रीय त्योहार पूरे उल्लास से मनाने में कभी भी पीछे नहीं रहीं।

अगस्त के महीने में आने वाला यह राष्ट्रीय त्योहार भारत के गली चौराहों से लेकर लालकिले की प्राचीर से एक ही उत्साह और उमंग से मनाया जाता रहा है। पर इस बार वैश्विक महामारी की बुरी नजर ने सबको अपनी चपेट में ले लिया। धार्मिक आयोजन से लेकर सामाजिक आयोजन तक अपनी छोटी सी परिधि में सिमटकर रह गए। लेकिन देशप्रेम से बढ़कर कोई प्रेम नहीं। हर्ष और उल्लास का यह राष्ट्रीय पर्व मनाया गया। कहीं कुछ तरुणों ने छोटी-छोटी टोली बनाकर मनाया। युवतियाँ अपने-अपने घरों की छतों पर राष्ट्रीय ध्वज लेकर खड़ी हो गईं। बच्चे छोटे-छोटे ध्वज लेकर मुस्कुराने लगे। देश-सेवा से अनुप्राणित पूर्वांचल कल्याण आश्रम की कोलकाता-हावड़ा शाखा ने भी इस वैश्विक महामारी को देखते हुए स्वतंत्रता दिवस को अपूर्व ढंग से मनाया। इस वर्ष भी कार्यकर्ता एवं उनके परिवार के द्वारा देश-भक्ति / रामभक्ति गीतों का प्रस्तुतीकरण का कार्यक्रम 11 बजे, शनिवार, 15 अगस्त 2020 को गूगलमीट / फ़ेसबुक के माध्यम से सम्पन्न हुआ।

कोलकाता-हावड़ा महानगर की सभी समितियों के भगिनी-बंधुओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बाल-वृद्ध, युवक-युवतियों ने अपने ओजस्वी देशभक्ति गीतों, तेजस्वी कविता पाठ, नृत्य-नाटिका और लोकगीतों से कार्यक्रम में चार-चाँद लगा दिए। देशभक्ति के आगे उम्र की सीमा अपना अर्थ खो चुकी थी। क्या युवा क्या प्रौढ़, क्या बच्चे बस सब बासंती रंग में रँगे राष्ट्र-प्रेम की आराधना में सबको जोड़े जा रहे थे। मंत्र-मुग्ध करने वाले विविध कार्यक्रमों ने सभी लोगों को लगभग दो घंटे तक निरंतर जोड़े रखा। सूची बहुत लंबी थी, उत्साह द्विगुणित था, किन्तु समय-सीमा के बंधन के कारण कलाकारों को ढांढ़स बँधाना पड़ा। कार्यक्रम में प्रस्तावित वक्तव्य रखा कोलकाता महानगर के अध्यक्ष श्री जितेन जी चौधरी ने और आभार ज्ञापन किया प्रान्तीय मंत्री श्री संजय रस्तोगी ने। प्रस्तुत है कार्यक्रम की कुछ विशेष चित्रमय झलकियाँ....

अलीपुर महिला समिति से श्रीमती अर्चना गोयल

मध्य हावड़ा पुरुष समिति

सबसे छोटा प्रतिभागी शौर्य अग्रवाल

बड़ा बाजार महिला समिति

साल्टलेक महिला समिति

दक्षिण पुरुष समिति

उत्तर हावड़ा महिला समिति

जोड़ामंदिर महिला समिति

अंतर से, मुख से, कृति से, निश्छल हो निर्मल मति से।
श्रद्धा से, मस्तक नत से, हम करें राष्ट्र अभिवादन।। ■

प्रकृति वंदन– एक पहल प्रकृति संवर्धन के लिए

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, कार्यकर्ता अलीपुर महिला समिति

प्रकृति वंदन – एक पहल प्रकृति संवर्धन के लिए प्रकृति का जो भव्य है, उसे बचाना सबका कर्तव्य है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की पर्यावरण संरक्षण गतिविधि और हिन्दू अध्यात्मिक सेवा संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रकृति के रक्षण और नैतिक मूल्यों के संरक्षण को लक्ष्य करके प्रकृति वंदन हरीतिमा समारोह का आयोजन 30 अगस्त को संपन्न हुआ। आचार्य वंदन के साथ कार्यक्रम का भव्य आयोजन प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में आशीर्वाद स्वरूप मिला माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का ओजस्वी संदेश प्रसारित किया गया। श्री विनोद बिड़ला, हिन्दू अध्यात्मिक सेवा संस्थान सचिव, इंदौर, ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और प्रकृति वंदन कार्यक्रम की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज की परिस्थितियों को देखते हुए संस्थान ने नैतिक मूल्यों के संवर्धन के साथ–साथ प्रकृति के संरक्षण को आंदोलन के रूप में लिया है। यह कार्यक्रम और भी अधिक गतिशील हो उठा है क्योंकि इसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रकृति संरक्षण गतिविधि का साथ भी प्राप्त हो गया है। आज इस कार्यक्रम का स्वरूप प्रकृति प्रतीक पादपों का वंदन है। जो केवल भारत में ही नहीं बल्कि समर्पित कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से विश्व के लगभग 15 देशों में भी मनाया जा रहा है। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए श्री विनोद जी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक माननीय परम पूज्य मोहन जी भागवत को मार्गदर्शन के लिए आमंत्रित किया।

अपने तेजस्वी वक्तव्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक माननीय परम पूज्य मोहन जी भागवत ने कहा कि आजकल पर्यावरण को लेकर सभी चिंतित हैं। 30 अगस्त को मनाया जा रहा यह प्रकृति वंदन कार्यक्रम अर्वाचीन है। इसका कारण है कि वर्तमान में हमारे जीवन का जो तरीका है पर्यावरण के अनुकूल नहीं है। वह तरीका प्रकृति को जीतकर जीने का तरीका है। प्रकृति को भोग करना ही मानव का लक्ष्य बन गया है। प्रकृति के प्रति भी कोई दायित्व मानव जाति का है, यह सोचने के लिए मानव–मन में कोई स्थान नहीं है। इसके दुष्परिणाम अब सामने आ रहे हैं। ऐसे ही अगर चला तो तो इस सृष्टि में जीने के लिए हम नहीं रहेंगे या हो सकता है सृष्टि ही नहीं रहे। यह सोचकर मनुष्य को लगा कि पर्यावरण का संरक्षण जरूरी है और पर्यावरण दिवस मनाना चाहिए। भारत का तरीका एकदम भिन्न है। अस्तित्व के

सत्य को हमारे पूर्वजों ने समझ लिया। उन्होंने समझाया कि हम भी प्रकृति के अंग हैं। शरीर में जैसे प्राण है वैसे ही प्रकृति हमारे लिए है। सृष्टि का पोषण हमारा कर्तव्य है। तब उन्होंने सिर्फ एक दिन के लिए नहीं बल्कि पूरे जीवन में प्रकृति को रचा बसा लिया ।उन्होंने आगे कहा कि अपने प्राण धारण के लिए हम सृष्टि से कुछ न कुछ लेते हैं। इसलिए हमारे पूर्वजों ने सदा ही प्रकृति का संरक्षण किया है। हमारे यहाँ कहा

जाता है कि शाम को पेड़ों को छेड़ना नहीं, पेड़ों में भी जीवन है यह अवधारणा हमारी थी। हमारे यहाँ रोज चींटी को आटा देना, गाय को गोग्रास, कुत्तों को श्वान बलि, पक्षियों को काक बलि, कृमि कीटों को अन्न बलि, अतिथि कोई गाँव में कोई भूखा न हो इसलिए किया जाता था क्योंकि हम प्रकृति और जीव-जगत के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते थे। बलि का अर्थ जीव हत्या नहीं है। यह अर्थ है कि गृहस्थ लोग भोजन से पहले इनके लिए भोजन निकालें। अर्थात् इनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी हमारी है। इस बात को समझकर हम जीते थे, इसलिए वृक्षों, नदियों, गाय, पर्वतों, साँपों की भी पूजा होती है। सम्पूर्ण विश्व जिस एक चराचर चैतन्य से व्याप्त है, उस चैतन्य को आत्मीयता से देखना उसके साथ मित्रता का व्यवहार करना हमारा तरीका था। 'परस्परं भावयन्तम्' - परस्पर सहयोग से सबका जीवन चले। देव को अच्छा व्यवहार दो तो देव भी आपको अच्छा व्यवहार देंगे। इस बात को हम भूल गए। परस्पर अच्छे व्यवहार के कारण प्रकृति चलती है। इस भटके हुए तरीके के प्रभाव में आकर हम प्रकृति प्रेम भूल गए। इसलिए आज प्रकृति वन्दन कर इसको हमें स्मरण करना पड़ रहा है। ऐसा होना चाहिए। ऐसा स्मरण हर घर में होना चाहिए। इस वर्ष तीस अगस्त को हम मना रहे हैं, लेकिन बहुत पहले से हमारे यहाँ नागपंचमी है, हमारे यहाँ तुलसी विवाह है, हमारे यहाँ गोवर्धन पूजा है। इन सारे दिनों को मनाते हुए पर्यावरण के प्रति सचेतनता प्रदर्शित करते थे। आज के संदर्भ में हम सब लोगों को इस संस्कार को अपने जीवन में पुनर्जीवित करना है। तब नई पीढ़ी भी उस भाव को सीखेगी। तो पिछले 350 वर्षो मे जो खराबी हुई है, कुछ सुधार संभव है। सृष्टि सुरक्षित होगी। *इस दिन*

को मनाते समय यह भाव नहीं होना चाहिए कि यह मनोरंजन का दिन है। अपने जीवन को सुंदर बनाने के लिए, संपूर्ण सृष्टि के पोषण के लिए ऐसा भाव होना चाहिए। आँखें खोलकर इस पर विचार करना चाहिए।

मोहन भागवत जी के वक्तव्य के पश्चात सारे आगंतुकवृंद ने वृक्ष देवता की पूजा की। शपथ लेकर वृक्ष, नदी, पर्वत, धरती एवं नैतिक मूल्यों के सम्मान करने की प्रतिज्ञा ली। इसके पश्चात श्री विमल जी ने महान विभूति, जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद जी गिरि महाराज को मार्गदर्शन करने के लिए अनुरोध किया। सभी का मार्गदर्शन करते हुए महामंडलेश्वर जी ने कहा कि हमारा बड़ा प्रेम है प्रकृति से और हम उसे देव मानते हैं। अन्य देशों में ऐसा नहीं है कि जल देवता हैं। वायु और अग्नि देवता हैं। हम धरती, आकाश, नीहारिका एवं नक्षत्रों को देवता मानते हैं। वनस्पतियों के बिना हमारा जीवन नहीं है। वन्य औषधियाँ, तुलसी दल, बिल्व-पत्र, विजया इनके बिना हमारी दिनचर्या का आरंभ नहीं। हमारी चर्या और सारे मंगल कार्य पुण्य-सलिला के तट पर ही संपन्न होते हैं। ये जो प्रकृति के प्रति हमारी ईश भावना है, उससे हमें बड़ा बल मिलता रहा है। प्रकृति हमारा पोषक तत्त्व है, उसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। लेकिन हमें मर्यादाओं का सम्मान करना चाहिए। भगवान ने भी मर्यादाओं का सम्मान किया है। हम भारतीयों में एक विलक्षण प्रवृत्ति है, वह है परमार्थ जो हम भारतीयों की आत्मा है। इस भावना के चलते हमने बहुत उन्नति की है। 'परोपकाराय पुण्याय, पापाय परपीडनम्'। दूसरों के हित में हमें आगे आना है। औषाधि देकर, अन्न देकर, वस्त्र देकर, उन्हें सम्मान देकर, उनके अधिकारों के प्रति उन्हें जागरूक कर और सेवा के विविध आयमों द्वारा हम परमार्थ कर सकते हैं। सेवा परमात्मा को रिझाने की अचूक साधना है। परमात्मा की तीन सत्ताएँ हैं। उसमें से पहली पारमार्थिक सत्ता में स्वयं भगवान परमार्थ कर रहे हैं। धरा में गंध बनकर, जीव–जगत को सूर्य की रोशनी देकर, नदियों का प्रवाह बनकर, चंद्रमा की ज्योत्सना बनकर आदि आदि। हिन्दू अध्यात्मिक सेवा संस्थान इस कार्य को बड़ी निष्ठा के साथ कर रहा है। उन्होंने संस्थान को शुभकामनाएँ दी।

तत्पश्चात् परम पूज्य रविशंकर जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति के संरक्षण का दायित्व ले लें तो भारत पर्यावरण की दृष्टि से दुनिया में सबसे आदर्श देश होगा। पूजा–पाठ के नाम पर नदियों में फेंका जाने वाला सामान सिर्फ प्रदूषण फैलाता है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी लोग मिलकर प्रकृति संरक्षण करें।

उल्लेखनीय है कि पूर्वांचल कल्याण आश्रम, कोलकाता हावड़ा महानगर की सभी समितियाँ भी इस कार्यक्रम में उल्लासपूर्वक सम्मिलित हुई। यह कार्यक्रम सभी के लिए आनंद के साथ दायित्वबोध जागृत करने वाला था। ■

स्मृति शेष

एकनिष्ठ कर्मयोगी: विश्वनाथ बिस्वास

-वीणापाणि दास शर्मा, अ.भा. सह महिला प्रमुख

(1977 से ही कार्य के साथ मन-प्राणपूर्वक जुड़े हुए पूर्वांचल कल्याण आश्रम दक्षिण बंग प्रांत के प्रांतीय अध्यक्ष एवं कल्याण भारती बांग्ला पत्रिका के संपादक माननीय विश्वनाथ बिस्वास का गत 10 अगस्त 2020 को देहावसान हो गया। देह रूप से उन्होंने महाप्रयाण तो किया है लेकिन वनवासी सेवा एवं संगठन के प्रेरक के रूप में वे चिरकाल तक हमारे बीच रहेंगे और कार्यकर्ताओं का पथ-प्रशस्त करते रहेंगे। प्रस्तुत है एक भावपूर्ण संस्मरण- संपादक)

विश्वनाथ बिस्वास

1986 में मैं पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में कल्याण आश्रम से जुड़ी थी। उसी वर्ष कोलकाता की एक धर्मशाला में प्रांतीय सम्मेलन में श्रद्धेय बिश्वनाथ दा के साथ परिचय हुआ। **प्रथम परिचय में ही ऐसा लगा कि मुझे अपना बड़ा भाई मिल गया जिनसे अपने मन की बात खुलकर कह सकती हूँ।** बाद में काम करते-करते यह विश्वास दृढ़तर होता गया। वे व्यक्तिगत जीवन में परिवार के पालन पोषण के लिए नौकरी करते थे लेकिन वस्तुत: वे एक पूर्णकालीन कार्यकर्ता की तरह ही वनवासी सेवा कार्य के लिए समर्पित थे। 1978 में पश्चिम बंगाल में कल्याण आश्रम का कार्य शुरू हुआ छात्रावास के माध्यम से। विश्वनाथ दा माननीय वसंत राव भट्ट के साथ दक्षिण बंगाल के अधिकांश जिलों के गाँव-गाँव में छात्रावास का मकान ढूँढ़ने के लिए प्रवास करते थे। **जिस प्रकार प्रभु रामचंद्र जी के साथ अनुज लक्ष्मण हर समय छाया की तरह साथ चलते थे उसी प्रकार बिश्वनाथ दा ने भी वसंत राव जी का भरपूर साथ दिया था।** मैंने और बंगाल के सभी कार्यकर्ताओं ने विश्वनाथ दा को काफी नजदीक से देखा। संगठन के सभी कार्यकर्ताओं के साथ उनका आत्मीय संपर्क था। कार्यकर्ताओं के परिवार की स्थिति समझने के लिए वे उनके घर भी जाते थे। सहज-सरल जीवन यापन, स्पष्टवादिता एवं कठोर परिश्रम उनके जीवन का अंग था। नौकरी का समय छोड़कर बाकी पूरा समय संगठन के लिए चिंतित रहते एवं निरंतर प्रवास करते थे। कुछ घटनाएँ साक्षी है कि वे संगठन के साथ कितनी गहराई से जुड़े थे। शायद 1988 में पुरुलिया के बांदवान ब्लॉक में 2500 वनवासियों को लेकर एक वनवासी सम्मेलन हुआ

था। उस समय कल्याण आश्रम की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। सम्मेलन समाप्ति के बाद सहभोज की व्यवस्था थी। एक-दो अधिकरी भी उपस्थित थे। एक छोटी सी टेबिल और दो-तीन कुर्सियों की व्यवस्था ही हो पाई। सब भोजन के लिए बैठ गए। किंतु विश्वनाथ दा वहाँ नहीं थे। मैं उन्हें बुलाने गई तो देखा कि वे एक शाल पत्ता में खिचड़ी लेकर जमीन पर सबके साथ मस्ती से बातचीत करते-करते खा रहे हैं। मैंने उनको कुर्सी पर बैठने के लिए कहा तो बोले, ''**अरे! मैं एक साधारण सा कार्यकर्ता हूँ, कुर्सी पर बैठने का अधिकारी नहीं हूँ। मुझे सभी के साथ जमीन पर बैठकर खाना खाने में बहुत आनंद आता है।**'' ऐसे सरल थे हमारे बिश्वनाथ दा।

कोलकाता में कल्याण आश्रम के 26, विधान सरणी कार्यालय में जितनी बार बैठक में जाती थी तो हर बार देखती थी कि सुबह से रात्रि तक 2-3 दिन की बैठक में दोपहर भोजन के बाद सभी कार्यकर्ता विश्राम करते थे किंतु बिश्वनाथ दा जमीन पर बैठकर कुछ लिखते रहते थे। मैं अक्सर पूछती, ''क्या आप विश्राम नहीं करेंगे?'' वे बोलते, ''विश्राम का समय कहाँ, बहुत काम बाकी है।'' सिर्फ कोलकाता में ही नहीं प्रांत के भी विभिन्न स्थानों पर जब वर्ग या सम्मेलन होते तो शाम को सभी कार्यकर्ता परस्पर बातचीत करते हुए नाश्ता करते थे किंतु बिश्वनाथ दा जमीन पर बैठकर निरंतर लिखते रहते, नई योजनाएं बनाते रहते। मैं सोचती कि बिश्वनाथ दा में इतनी ऊर्जा कहाँ से आती है? जब-जब कार्यकर्ता एक साथ कार्यक्रम में उपस्थित होते तो दोपहर विश्राम के समय वे प्राय: कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत और संगठन संबंधी बातचीत किया करते थे। कार्यकर्ताओं की व्यक्तिगत समस्याएँ सुलझाने का प्रयास भी करते।

महिला संगठन के लिए वे विशेष रूप में चिंतित रहते थे। महिलाओं में चेतना जागृत करने एवं उनको शिक्षित करने हेतु गाँव-गाँव में अनौपचारिक महिला शिक्षा केंद्र हमने विश्वनाथ दा के प्रेरणा से प्रारंभ किए थे। वनवासी महिलाओं को कल्याण आश्रम से जोड़ने के लिए गाँव में नए-नए प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य संगठन और संगठन के कार्यकर्ता थे। हर समय यही बोलते थे वनवासियों का मन जीतना है तो उनके पास जाना तथा उनके सुख-दु:ख में भागीदार होना होगा तथा गाँव-गाँव में निरंतर प्रवास करना होगा। वे मानते थे कि वनवासी का सम्मान करने, उनकी भाषा सीखने एवं उनके साथ एकात्म होने से ही कल्याण आश्रम का काम बढ़ेगा। निरंतर श्रम के कारण उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। कई बीमारियों ने उन्हें घेर लिया। उनके कई ऑपरेशन भी हुए और कोरोना काल में तो घर से निकलना संभव ही नहीं था। इसके बावजूद वे समय निकालकर बस में बैठकर कल्याण भवन आते थे। कल्याण भारती बांग्ला पत्रिका के लिए सामग्री जुटाने का कार्य करते और कार्यालय में सब लोगों का हाल चाल भी पूछते थे। सभी के मना करने के बावजूद भी कार्यकर्ताओं से संपर्क हेतु घर से निकलते थे। **कह सकती हूँ कि विश्वनाथ दा कल्याण आश्रम के साथ पूरी तरह एकरूप हो गए थे।** ऐसे ध्येयनिष्ठ कर्मयोगी के चरणों में शत शत प्रणाम। ■

हलमा परमार्थ की परंपरा : जल संरक्षण के लिए वनवासी जन आंदोलन

- यूट्यूब प्रतिलेखन - डॉ. रंजना त्रिपाठी, कार्यकर्ता अलीपुर महिला समिति

शिवगंगा के द्वारा आयोजित वर्चुअल समारोह के माध्यम से सामाजिक कार्यकर्ता **राजाराम कटारा** जी ने बड़े ही सरल सहज शब्दों में हाथीपावा पहाड़ी के पास बसे वनवासी समुदाय में जलसंरक्षण के लिए किए गए उपायों का लेखा-जोखा रखा। उनके ही शब्दों के माध्यम से वनवासी समुदाय की पावन परंपरा **हलमा** को आपके समक्ष प्रस्तुत करने का यह एक लघु प्रयास है।

राजाराम कटारा जी ने बताया कि वनवासी गाँव में जब लोग संकट में फँस जाते हैं तो मिलकर निस्वार्थ भाव से गांव को संकट से उबार लेते हैं। *हलमा संकट का साथी है। इसका आह्वान तभी होता है, जब लोग अपने दम पर संकट से उबर नहीं पाते हैं। यह हलमा परंपरा गाँव-गाँव में विद्यमान है, हर गांव में किसी न किसी रूप में प्रचलित है। मिलकर काम करने की परंपरा है यह।* शिवगंगा झाबुआ ने इसे बड़ा रूप दे दिया है। हाथीपावा की पाहाड़ियों में हलमा के माध्यम से जल-जंगल-जमीन इन सबके संरक्षण और संवर्धन का काम हो रहा है । झाबुआ मे बहत पहले से ही किसी न किसी रूप में काम शुरू हो गया था। झाबुआ में जिस प्रकार की चुनौतियाँ थीं उसे देखकर ऐसा लगा कि एक बड़ा जन आंदोलन खड़ा होना चाहिए। बड़े बुजुर्गो ने भी सुझाया कि झाबुआ में जन समूह को जागृत करने के लिए, इकट्ठा करने के लिए, पुरुषार्थ पैदा करने के लिए, आत्मविश्वास पैदा करने के लिए झाबुआ की भीली परंपरा हलमा का आयोजन करना चाहिए। तब 2009-10 में हलमा का आयोजन किया गया, किंतु आयोजनकर्त्ताओं को तब तक इस बात का भरोसा नहीं था कि हलमा आयोजन सफल हो पाएगा। जनयात्रा निकाली गई। लोगों को भोजन करवाकर घर भेज दिया गया। तब लोग महेश जी के पास आए और कहा कि 'ऐसी यात्राएँ निकालने से, नारे लगवाने से, भोजन करवाने से हमारी समस्याओं का समाधान नहीं होगा। जल नहीं रुकेगा। हम तो हलमा करने आए हैं।' आयोजनकर्त्ताओं को लगा कि भूल हो गई। तब लगा कि इस हलमे का पुनर्जागरण किया जा सकता है। लगने लगा कि वनवासी समाज के जेहन में हलमा है। समाज इसके लिए तैयार हो रहा है । जरूरत है उनको इकट्ठा करने की। 2009-10 में तब हाथीपावा की पहाड़ी पर फिर से हलमे का आयोजन हुआ। इस आयोजन में शिवगंगा से जुड़े

कार्यकर्ता घर-घर गए। हलमे और स्वाभिमान की बातों की चर्चा की । हलमे से होने वाले लाभों को बताया। परिवार में बैठकर कार्यकर्त्ताओं ने हलमे के लिए परिवार को विश्वास में लेकर उनका पंजीयन करवाया। कार्यक्रम की रूपरेखा का विस्तार से

वर्णन किया । उदाहरण के तौर पर – जैसे अगले दिन हलमा है तो सुबह खाना खाकर अपने घर से निकलते हैं। कोई 20 किलोमीटर, कोई पचास

किलोमीटर, कोई अस्सी किलोमीटर साधन लेकर हलमा में सम्मिलित होने के लिए आने लगे। और

गाँव-गाँव जाकर उनकी असुविधाओं को दूर करने का प्रयास करने लगे। 350 गाँव एक साथ आकर धरती माता की सेवा में जुट गए। हलमा के लिए स्वयं पूज्यपाद स्वामी अवधेशानंद गिरि जी वनवासी समुदाय का नेतृत्व करते रहते हैं। हलमा के जागरण गीत का मुख्य स्वर धरती माँ की सेवा और प्रकृति का संरक्षण है। हलमा भील समाज की श्रेष्ठ परंपरा है। 2009-10 में हलमे की जो परंपरा शुरू हुई उसने हाथीपावा की पहाड़ी को हराभरा बना दिया है। 30,000 पेड़ लगाये गये जिससे जल संरक्षण में सहायता मिली। इस परंपरा ने बंजर धरती को हरा-भरा बना दिया है। सच में यह वही समाज है जिसने प्रभु राम का सहयोग किया था। वंदनीय है अपना वनवासी समाज! ■

तमसो मा ज्योतिर्गमय

- सरिता सांगानेरिया, कोलकाता महानगर दीपक प्रमुख

तिमिर मिटाए नन्हा दीपक
नन्हें दीपों का दीप - पर्व
जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए
जल रहा तूफ़ान में भी,
दीप जो उसको नमन है।

कितनी दूरगामी सोच थी हमारे अतीत के कार्यकर्ताओं की - **दीप से दीप जले, तमसो मा ज्योतिर्गमय।** अंधकार में जी रहे वनवासी समाज के जीवन को ज्योतिर्मय कर देने की कल्पना। मन से निर्मल, सजल हृदय वनवासी समाज के धरती अंबर को प्रकाश से भर देने की योजना। याद आने लगती हैं कविवर सोहनलाल द्विवेदी जी की पंक्तियाँ –

गीतों की इस स्वरमाला में
एक गीत तुम्हारा भी है
मेरी पूजा की थाली में
एक दीप तुम्हारा भी है

वनवासी कल्याण आश्रम ने वनवासी समुदाय के

उत्थान और विकास के लिए अनेक प्रकल्प सृजित किए हैं। उसमें से एक प्रकल्प दीप-माला सृजन भी है। इसके अन्तर्गत कोलकाता-हावड़ा महानगर महिला समिति प्रत्येक वर्ष कुम्हारों से दीपक खरीदकर उन्हें सजाकर, कलात्मक और मांगलिक रूप देकर घर-घर पहुँचाने का संकल्प लेती है।

दीपक-विक्रय से मिलने वाली धनराशि वनवासी समाज के विकास में लगा दी जाती है।

प्रकाश-पर्व दीपावली आने के पहले से ही समितियाँ दीपकों को सजाना-सँवारना प्रारंभ कर देती हैं। जन-जन तक इस संदेश को पहुँचाने के लिए समितियाँ बड़ी जोर-शोर से दीपकों को खरीदने के लिए परिजनों को प्रेरित करती है और दीपों

को घर-घर पहुँचाने का संकल्प पूरा करती हैं। प्रदर्शनी लगाकर भी लोगों को आकर्षित करने का प्रयास किया जाता है। *एक आंदोलन का रूप ले चुका है यह प्रकल्प*। इसी बहाने देश की मिट्टी चूमने का सौभाग्य भी मिलता है।

प्रतिवर्ष इस कार्य को विभिन्न समितियाँ क्रांति का रूप दे देती हैं। जब दीप-माला पर चर्चा हो तो कैसे भूल सकते हैं हमारी समर्पित कार्यकर्ता **स्वर्गीया दमयंती बियानी जी** को, जिनके अथक प्रयासों ने पूरे महानगर को दीपक निर्माण योजना की माला में गूँथ कर रख दिया। यद्यपि वे आज हमारे बीच नहीं है, लेकिन उनके द्वारा रोपा गया पौधा आज वट-वृक्ष का रूप ले चुका है।

कोरोना ने आज पूरे विश्व में कोहराम मचा रखा है। फिर भी दीप सृजन और वितरण की अजस्र धारा रुकी नहीं है। कुल 20,000 दीपक कोलकाता महिला समिति ने एवं 5,000 दीपक हावडा महिला समिति की बहनों ने बनवाए हैं। सभी समितियों ने अपनी-अपनी क्षमता अनुसार दीपक लेकर चित्रकारी का काम शुरू कर दिया है। पहली बार 100 चौमुखा दीपक एवं 100 कजरौटा भी बनवाया है। वनवासी सेवा का संदेश देने वाला महानगर समितियों का यह अतीव महत्वपूर्ण प्रकल्प है। सभी से निवेदन है कि इस काम को त्वरित गति से पूरे मन के साथ आगे बढाएं। हर दीपक की हर बाती अँधेरे से लड़ने की जंग में पूरे मन से शामिल है और हम भी शामिल हैं इस संकल्प के साथ-

ज्योतित रहना ज्योतित करना
पहला धर्म हमारा है।
प्राणों से भी प्यारा है,
वनवासी बंधु हमारा है।। ■

हमारे प्रिय महितोष दा

- रंजू सिन्हा, दक्षिण बंग प्रांत महिला प्रमुख

25 दिसंबर 1958 को पूर्व मेदिनीपुर जिले के पंजघरी गांव में जन्मे अखिल भारतीय छात्रावास प्रमुख महितोष गोल का गत 10 जुलाई 2020 को देहान्त हो गया। एक आदर्श कार्यकर्ता के रुप में वे सदा स्मरणीय रहेंगे। उनका असामयिक निधन संगठन के लिये अपूरणीय क्षति है। उनके समर्पित जीवन के भावपूर्ण सस्मरण प्रस्तुत है।

1987 में महितोष दा ने उत्तर बंगाल में कल्याण आश्रम के खड़ीबाड़ी छात्रावास के छात्रावास प्रमुख बनकर अपना कर्म जीवन शुरू किया। मैंने उन्हें पुरुलिया जिला के कुमारी छात्रावास के वार्षिकोत्सव में पहली बार देखा। महितोष दा ही सारी व्यवस्थाएं संभाल रहे थे। उस दिन लगा कि यह तरुण कार्यकर्ता संगठन को बहुत आगे ले जाएंगे और सचमुच वे छात्रावास प्रमुख से धीरे-धीरे अखिल भारतीय छात्रावास प्रमुख हो गए थे।

उनके साथ मेने बहुत दिन काम किया। मेरे साथ उनका एक बड़ी दीदी और छोटा भाई का संबंध था। बहुत नजदीक से उनको मैंने देखा, उनको देखकर ऐसा लगा कि पावं में चक्कर, दिल में आग, सिर में बर्फ, मुंह में शक्कर - आदर्श कार्यकर्ता के सभी गुण उनमें थे। संगठन की विभिन्न प्रकार की समस्याओं को आसानी से संभालते थे। आज भी बंगाल में जितने कार्यकर्ता हैं उनमें से अधिकांश कार्यकर्ता महितोष दा के कारण संगठन में आए हैं। प्रत्येक छात्रावास के लिए उनके अन्दर एक स्नेह भाव था। उनके छात्र-स्नेह का एक उदाहरण देती हूँ। एक बार बागमुण्डि में एक कार्यक्रम था। छात्रावास के एक छात्र को तेज बुखार हो गया। व्यस्तता के वावजूद उन्होनें अन्दर जाकर उस छात्र का सिर पानी से धो दिया और अपने हाथ से उसे बिस्कुट खिलाया। कोई काम उनके लिए कठिन नहीं था। हमारे महिला कार्य विस्तार के पीछे भी उनका बहुत योगदान था। 2018 में अयोध्या पहाड़ में महिला सम्मेलन हुआ था, उस समय उनका अखिल भारतीय सह छात्रावास प्रमुख का दायित्व था। उसमें भी समय निकालकर 2 दिन हमारे साथ रहे। सबके खाने के बाद वे भोजन करते थे। आज भी पुरुलिया नगर समिति के सभी कार्यकर्ता उनको याद करते हैं। व्यक्तिगत जीवन में विवाहित थे, लेकिन परिवार के बारें में ज्यादा बोलते नहीं थे। हर समय संगठन के बारे में बातचीत करते थे। उन्हें हिन्दी बोलना-लिखना नहीं आता था। लेकिन अ.भा. दायित्व पाने के बाद कुछ दिन के अन्दर ही उन्होंने हिन्दी बोलना लिखना शुरू कर दिआ। आज वे हमारे बीच नहीं हैं। अचानक चले गए। अब हमें यह कौन कहेगा '*दीदी, चिंता मत करिए; मैं हूँ न। सब व्यवस्था हो जाएगी, कार्यक्रम अच्छा होगा। सब ठीक हो जाएगा।*' ऐसा कर्त्तव्यनिष्ठ, उद्यमशील, लक्ष्य को पूरा करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ व व्यवहार कुशल, कार्यकुशल तथा सदा प्रसन्नचित रहने वाले कार्यकर्ता थे हमारे महितोष दा। मैं उन्हें श्रद्धा के साथ नमन करती हूँ। ■

स्मृतियाँ ही जिनकी शेष हैं....आदर्श जिनके हमारा पाथेय है

- उत्तम माहातो, संगठन मंत्री, दक्षिण बंग प्रांत

जिनके पदचिह्नों पर चलकर पूर्वांचल कल्याण आश्रम ने चलना सीखा, जिनकी उंगली थामकर कोलकाता महानगर ने वनवासी सेवा का व्रत लिया और जिनकी आँखों की चमक आज भी हम सबका मार्गदर्शन करती है... ऐसे समर्पित, त्यागमूर्ति पूर्वांचल कल्याण आश्रम के प्रेरक **बसन्तराव भट्ट** के जीवन और कृति पर आधारित संस्मरण पुस्तिका **सबार आपनजन** का विमोचन व लोकार्पण अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के सर्वभारतीय संगठन मंत्री श्री अतुल जोग के करकमलों द्वारा आन्तरिक श्रद्धा भावना के साथ सम्पन्न हुआ। पुस्तक लोकार्पण समारोह सायं साढे चार बजे कोलकाता स्थित कल्याण भवन सभागार में कोविड के नियमानुसार पच्चीस लोगों की उपस्थिति में सम्यक् रूप से सम्पन्न हुआ। मंच पर पूर्वांचल कल्याण आश्रम के महामंत्री श्री अमित सांतरा, आर. एस. एस. के पूर्व क्षेत्र संघचालक श्री अजय नन्दी, वरिष्ठ प्रचारक व कल्याण आश्रम में 1987 से विविध दायित्वों का निर्वहन किए श्री गजानन बापट भी उपस्थित थे।

मंच पर उपस्थित वरिष्ठ प्रचारक श्री गजानन बापट ने अपने स्वागत उद्बोधन में, 1956 से 1977 तक वसन्तराव जी के सतत् परिश्रम को याद करते हुए बताया कि विकट परिरिस्थितियों में बसंतराव जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को शिखरतुल्य ऊँचाई प्रदान की और उसके पश्चात् वनवासी सेवा संगठन हैतु सर्बात्मना समर्पित हो गए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री भगैया जी ने वर्चुअल माध्यम से अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया। अ. भा. संगठन मंत्री श्री अतुल जोग ने भी अपना अनुभव बताते हुए कहा कि पूर्वांचल में काम खडा करने के लिए वसन्त राव कैसे एक कुशल योजक, मार्गदर्शक की भांति, नये नये प्रयोग करते हुए मेघालय के एंडरसन मावरी, हिप्सन राय, नागालैण्ड में रानी मां गाईदिन्ल्यू, कांग्रेस के विधायक रहे एन. सी. जेलियांग को कल्याण आश्रम के काम में जोड़ने में सफल रहे। श्री जोग ने इस पुस्तक को सभी को पढने और हिन्दी में भी अनुवाद और मुद्रण की आवश्यकता बताई। पूर्वांचल कल्याण आश्रम के महामंत्री श्री अमित सांतरा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। दक्षिण बंग के संगठन मंत्री श्री उत्तम माहातो ने अनुष्ठान का संचालन किया। इस कार्यक्रम में संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री प्रदीप जोशी, प्रान्त प्रचारक श्री जलधर माहातो, कल्याण आश्रम के क्षेत्र संगठन मंत्री श्री राजेन्द्र मादला, वरिष्ठ प्रचारक (96 साल) श्री केशव दीक्षित एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री रथीन्द्रमोहन वन्दोपाध्याय, अखिल भारतीय नगरीय कार्य प्रमुख श्री शंकरलाल अग्रवाल भी उपस्थित थे। रीतम एप के द्वारा देशभर में हजारों की संख्या में ऑनलाइन माध्यम से पूरा अनुष्ठान देखा गया। ■

अमृत वचन

कार्य की नहीं, कार्यकर्ता की चिंता करो। कार्यकर्ता का यथोचित ध्यान रखो एवं आदर-सम्मान करो। कार्य तो अपने आप होगा और सर्वश्रेष्ठ होगा।

- श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी

बोधकथा

किसी बात की परख कैसे करें?

हमारे आस-पास काफी लोग ऐसे भी होते हैं जो मित्रों के बीच मतभेद पैदा करने की कोशिश करते रहते हैं। ऐसे लोगों की बातों की परख करने के लिए उनकी सत्यता, अच्छाई और उपयोगिता जरूर देखनी चाहिए। इस संबंध में यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात का एक प्रसंग प्रस्तुत है-

एक बार की बात है, एक दिन सुकरात के पास एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि मैं आपके मित्र के बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। यह बात सुनते ही सुकरात ने कहा, "आप मुझे मेरे मित्र के बारे में कुछ बताएं, उससे पहले मैं इस बात की परख करना चाहता हूँ कि यह बात जानना मेरे लिए जरूरी है या नहीं। आपको मेरे तीन प्रश्नों के जवाब देने होंगे।" सुकरात के प्रश्नों के जवाब देने के लिए उस व्यक्ति ने हाँ कर दी। सुकरात ने पहला प्रश्न पूछा, "क्या आप जो बात बताने वाले हैं, वो पूरी तरह सत्य है?"

व्यक्ति ने जवाब दिया, "मैं यह नहीं कह सकता, मैंने भी दूसरे लोगों से इस बारे में सुना है।" सुकरात ने दूसरा प्रश्न पूछा, "क्या यह बात मेरे मित्र के अच्छाई के बारे में है?" व्यक्ति ने कहा, "नहीं, यह बात आपके मित्र की किसी अच्छाई के बारे में नहीं है।" यह जवाब सुनकर सुकरात ने कहा, "इसका मतलब यह है कि आप जो बताने वाले है, उसमें किसी की अच्छाई की बात नहीं है। आप यह भी नहीं जानते हैं कि यह सच है भी या नहीं। अब तीसरे प्रश्न का उत्तर दीजिए। "आप जो बात मुझे बताना चाहते है, क्या वह मेरे लिए किसी तरह उपयोगी है?" यह प्रश्न सुनकर वह व्यक्ति थोड़ा असहज हो गया। उसने कहा, "नहीं, इस बात की आपके लिए कोई उपयोगिता नहीं है।" सुकरात ने कहा, "भाई आपकी बात न तो सत्य है, न ही उसमें किसी की भलाई है और न ही वह मेरे लिए उपयोगी है तो मैं वह बात सुनने में मेरा समय बर्बाद क्यों करूँ?"

सुकरात की बात सुनकर वह व्यक्ति चुपचाप वहाँ से चला गया। ■

कविता

कदम मिलाकर बढ़े चलें

- लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खीदा'

अंधियारे का राज न होगा। अंतर्मन की ज्योत जले।।
कदम मिलाकर बढ़े चले हम, बढ़े चलें ।।ध्रु।।
सूरज रोज बता कर जाता।
रात कटेगी दिन उग आता।।
राज करेगा उजियारा ही।
तमस मिटाने दीपक जलता।।
आशा का यह दीप हृदय में सदा जले।।1।।
कदम मिलाकर...

सूरज की आभा से झिलमिल।
चांद चांदनी को दे गरिमा।।
उसके जीवन में भी आती।
कभी अमावस कभी पूर्णिमा।।
परिक्रमा पृथ्वी की फिर भी नहीं टले।।2।।
कदम मिलाकर...

सूरज की किरणें सागर से।
भाप बनाकर जल ले जाती।।
पवन स्वार हो मेघ मालिका।
पर्वत माला से टकराती।।
जल बरसे, बहकर सागर के गले मिले।।3।।
कदम मिलाकर...

विषाणुओं ने कहर ढा दिया।
वैश्विक महाऽमारी बन आया।।
भारत की जीवन शैली ने।
योग साधना को अपनाया।।
प्रतिरोधक बल और आत्मबल फले-फुले।।4।।
कदम मिलाकर...

संकट रूप बदल कर आए।
चाहे हमसे फिर टकराए।।
प्रकृति वंदन, जीव दया से।
मानव मन अतुलित बल पाए।।
परोपकारी आत्म साधना ना भूले।।5।।
कदम मिलाकर... ■

कर्मयोगी बसन्तराव भट्ट के जीवन पर आधारित 'सबार आपनजन' पुस्तक का लोकार्पण समारोह

पावन है नाम तुम्हारा,
पावन है आत्म-कहानी ।
पावन बन जग में छाए,
तुम तप की अमर निशानी ।।

मानव को राह दिखाने,
तुम दीपशिखा बन आए ।
ले तेरा पुण्य सहारा,
हम भी पावन बन जाए ।।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग, 2 तल्ला, कमरा नं. 51
कोलकाता - 700007, दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792